International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2022; 4(2): 182-186
Received: 26-10-2022
Accepted: 20-12-2022

विष्णु कुमार
शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
विष्णु कुमार
शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

अलवर जिले में नगरीय प्रसार और बदलता भूमि उपयोग प्रतिरूप (खेड़ली कस्बे के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन)

विष्णु कुमार

सारांश
इस शोध पत्र "अलवर जिले में नगरीय प्रसार का खेड़ली कस्बे के विशेष सन्दर्भ में" बदलते हुए भूमि उपयोग का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में खेड़ली कस्बे के नगरीय प्रसार और बदलते हुऐ भूमि उपयोग प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है। कस्बे में नगरीय प्रसार की प्रवृत्ति का आंकलन किया गया है। बढ़ती हुई जनसंख्या, प्रवास और राजनैतिक एवं प्रशासनिक कारकों द्वारा नगर के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान होता है। नगरीय प्रसार के द्वारा भूमि उपयोग में सर्वाधिक परिवर्तन होता है। अलवर जिले में नगरीय प्रसार की प्रवृत्ति विभिन्न कस्बों में अलग–अलग पायी जाती है। खेड़ली कस्बे के सन्दर्भ में नगरीय प्रसार कृषि उपज मण्डी, रेलमार्ग की उपलब्धता जैसे आकर्षक कारकों के द्वारा हुआ है। खेड़ली कस्बे के नगरीय भूमि उपयोग प्रतिरूप में विविधता और कालिक परिवर्तन देखने को मिलता है।

कूटशब्द : नगरीय प्रसार, भूमि उपयोग, नगरीयकृत क्षेत्र, कार्यशील जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, कृषि उपज मण्डी, जनसांख्यीकीय, आव्रजन।

प्रस्तावना
खेड़ली कस्बा राजस्थान राज्य के अलवर जिले में अलवर एवं भरतपुर जिले की सीमा पर स्थित खेड़ली मण्डी के नाम से विख्यात है। अलवर जिले का यह छोटा सा शहर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्दर शामिल है। यह कस्बा खेड़ली गंज और खेड़ली मण्डी दोनों नामों से जाना जाता है। यह छोटा सा कस्बा अलवर जिला मुख्यालय से लगभग 80 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। खेड़ली कस्बा 27^0 12′ उत्तरी अक्षांश तथा 77^0 02′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसकी समुद्रतल से औसत ऊँचाई 204.35 मीटर है। खेड़ली बाणगंगा नदी के मैदानी क्षेत्र में स्थित है, जिसका ढलान दक्षिण–पूर्व की ओर है।

खेड़ली अपने पृष्ठक्षेत्र (Hinter land) से सड़कों एवं रेलमार्ग द्वारा जुड़ा होने के कारण यह जिले का महत्वपूर्ण कस्बा एवं कृषि उपज मण्डी है। राज्य राजमार्ग संख्या 22 खेड़ली–नगर तथा राज्य राजमार्ग संख्या–44 खेड़ली–नदबई कस्बे से होकर गुजरते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–21 आगरा–जयपुर–बीकानेर खेड़ली कस्बे से लगभग 14 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण की ओर से गुजरता है। जयपुर–बान्दीकुई–आगरा ब्राडगेज रेलवे लाइन शहर के मध्य से गुजरती है, जिस पर यह एक महत्वपूर्ण स्टेशन है। यहाँ इस लाइन पर गुजरने वाली लगभग सभी रेलगाड़ियों का ठहराव है। जिस कारण यह रेलमार्ग द्वारा आसपास के क्षेत्र, राज्य और देश के अन्य प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

खेड़ली शहर के पृष्ठ प्रदेश (Hinter land) की कृषि भूमि बहुत अधिक उपजाऊ है, जिसमें गेंहूँ और सरसों की फसल प्रमुख रूप से उतपादित की जाती हैं, जो राज्य के अन्य जिलों एवं देश के अन्य भागों में भेजी जाती हैं, जो राज्य के अन्य जिलों एवं देश के अन्य भागों में भेजी जाती हैं। अतः इस प्रकार खेड़ली अपने चारों ओर के ग्रामीण क्षेत्र हेतु एक उप क्षेत्रीय सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हुआ हैं।

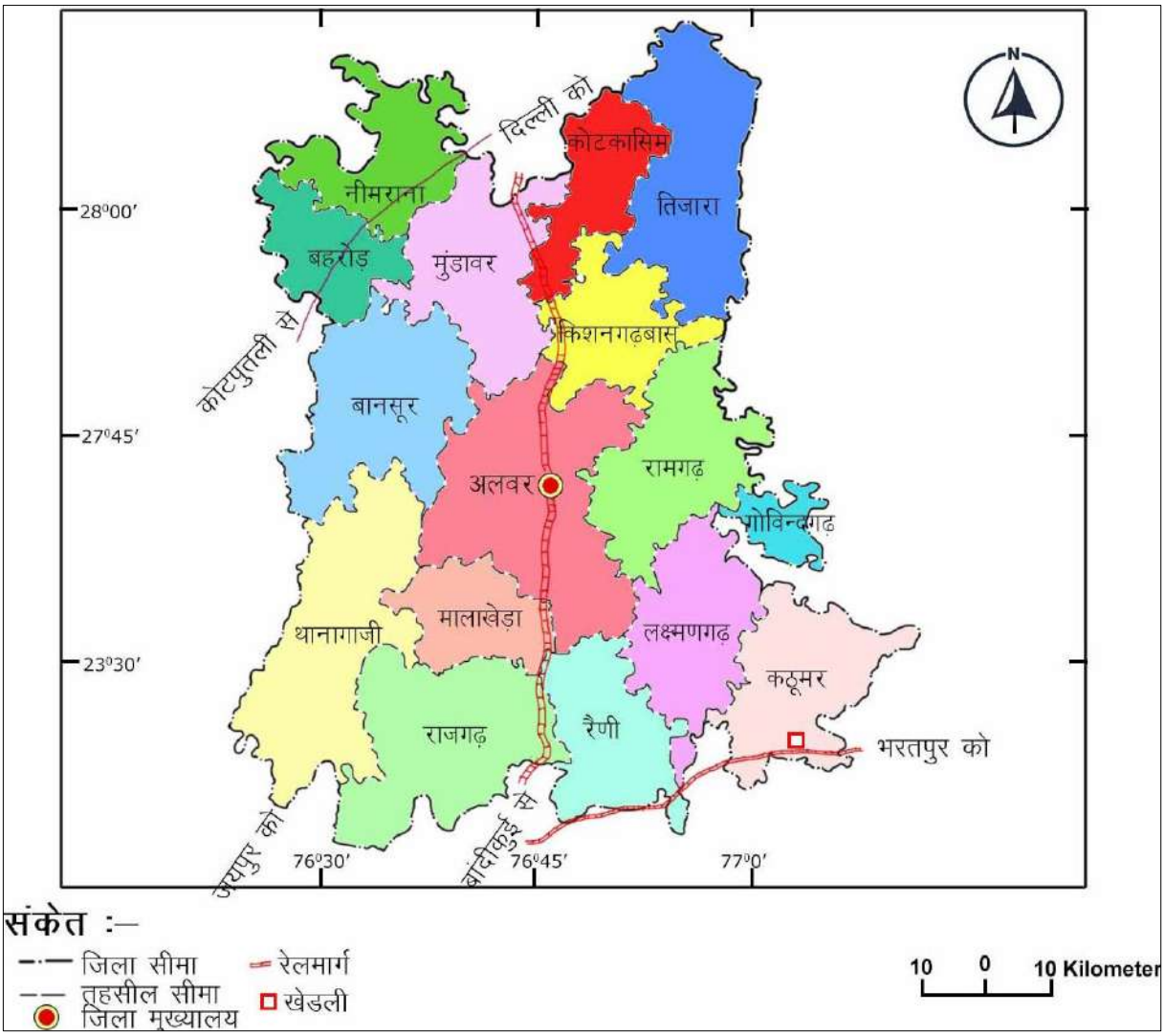

मानचित्र 1

शोध अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र में खेड़ली कस्बे में नगरीय प्रसार की प्रवृत्ति का अनुमान लगाना है। किसी भी शहरी क्षेत्र के विकास में विभिन्न कारकों का योगदान होता है। खेड़ली कस्बे के विकास में कृषि मण्डी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही साथ जयपुर एवं आगरा दो बड़े महानगरों के साथ रेलमार्ग से जुड़ा होना इसके नगरीय प्रसार में योगदान दिया है। इस अध्ययन में नगरीय प्रसार के साथ बदलते हुऐ भूमि उपयोग प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है।

शोध परिकल्पना

1. खेड़ली कस्बे में नगरीय भूमि उपयोग में विविधता विद्यमान है।
2. खेड़ली कस्बे में नगरीय भूमि उपयोग प्रतिरूप में कालिक परिवर्तन हुआ है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन करने हेतु प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिनके आधार पर समस्या का विश्लेषण कर संभावित शोध परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव देने का प्रयास किया गया है। आँकड़ों का संकलन, संचयन, एकत्रीकरण, संग्रहण, सारणीयन कर विश्लेषण किया गया है। शोध को सैद्धान्तिक एवं मौलिक स्वरूप प्रदान करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय प्रविधियों का भी उपयोग किया गया है। नगर नियोजन विभाग, अलवर, नगर परिषद्, अलवर, नगर विकास प्राधिकरण, अलवर, जनगणना विभाग, अलवर, भूमि सर्वेक्षण विभाग, अलवर, मौसम विभाग, अलवर, उद्योग केन्द्र, अलवर आदि विभागों एवं कार्यालयों से आँकड़ों का संकलन किया गया है।

विश्लेषण

विद्यमान भू–उपयोग

खेड़ली में आधार वर्ष 2011 में नगरीयकृत क्षेत्र के अन्दर 524.87 एकड़ भूमि है। जिसमें से 460.28 एकड़ भूमि पर नगरीय क्षेत्र विकसित है जो कुल भूमि का लगभग 87.69 प्रतिशत है तथा 12. 31 प्रतिशत भाग खुले क्षेत्र के रूप में चिह्नित है। कुल विकसित क्षेत्र की 54.40 प्रतिशत भूमि आवासीय उपयोग में सम्मिलित है। आवासीय भूमि उपयोग के पश्चात् द्वितीय स्थान पर परिसंरचण के अन्तर्गत 20.11 प्रतिशत भू उपयोग शामिल है। इसी प्रकार औद्योगिक (2.35 प्रतिशत), वाणिज्यिक (11.32 प्रतिशत) एवं आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत (0.83 प्रतिशत) भूमि उपयोग में आती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शहर के पार्क एवं खुले क्षेत्रों का अभाव है। वर्ष 2011 की जनगणना में विकसित क्षेत्र में जनघनत्व 60 व्यक्ति प्रति एकड़ है। वर्ष 2011 का विद्यमान भूमि उपयोग निम्न तालिका में स्पष्ट किया गया है।

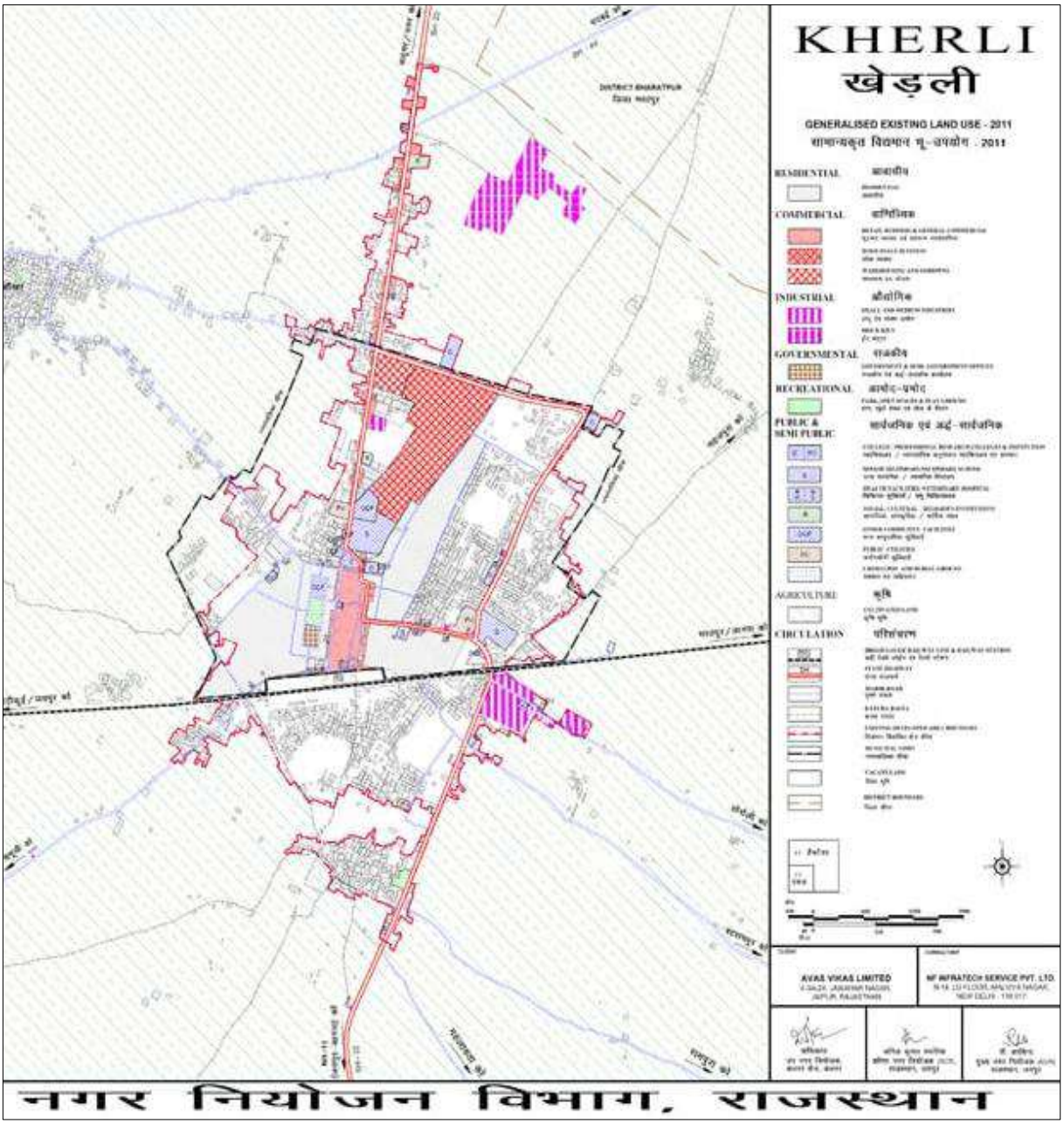

मानचित्र 2

तालिका 1: विद्यमान भूमि उपयोग, खेड़ली 2011

क्र.सं.	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीय क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	250.38	54.40	47.70
2	वाणिज्यिक	52.10	11.36	9.93
3	औद्योगिक	10.80	2.35	2.06
4	राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय	1.52	0.33	0.29
5	आमोद प्रमोद	3.82	0.83	0.73
6	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	49.10	10.66	9.35
7	परिसंचरण	92.55	20.11	17.63
	विकसित क्षेत्र	460.27	100.00	87.69
8	खुले स्थल	64.60		12.31
	नगरीयकृत क्षेत्र	524.87		100.00

स्रोतः नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, 2021

खेड़ली कस्बे के व्यापारिक महत्व और इसकी अवस्थिति के कारण भविष्य में इसकी जनसंख्या वृद्धि और भू उपयोग में परिवर्तन होने की पूरी सम्भावना है जिस आधार पर शोधार्थी ने भविष्य की अनुमानित जनसंख्या और परिवर्तित भूमि उपयोग का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

जनांकिकी

जनसंख्या वृद्धि नगरीय प्रसार को बढ़ावा देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक होता है। खेड़ली कस्बे के सन्दर्भ में वर्ष 1991 की जनसंख्या 12263 व्यक्ति थी, जो वर्ष 2001 में बढ़कर 21582

व्यक्ति हो गई। वर्ष 2011 में यह जनसंख्या 27.42 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ 27500 व्यक्ति है।
खेडली कस्बे एवं इसके चारों ओर के ग्रामीण क्षेत्रों को भविष्य का नगरीय क्षेत्र मानकर वर्ष 2031 का मास्टर प्लान तैयार किया गया है। खेड़ली कस्बे की अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखकर भावी जनसंख्या का अनुमान लगाया गया है।

तालिका 2: जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति एवं अनुमान, खेड़ली– 2031

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर प्रतिशत में
2001	21582	–	–
2011	27500	+ 5918	+ 27.42
2021	35000	+ 7500	+ 27.27
2031	45000	+ 10000	+ 28.57

स्रोतः भारतीय जनगणना 2011 एवं नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, 2021

खेड़ली कस्बा सघन कृषि क्षेत्र में होने के फलस्वरूप इससे कस्बे के व्यापार, यातायात, कृषि, आधारित उद्योग, घरेलु उद्योग एवं सम्बन्धित क्रियाकपालों में वृद्धि होगी। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का कार्यरत व्यक्तियों की अनुपात 25. 22 प्रतिशत था, जो कि 2031 में लगभग 33 प्रतिशत होने का अनुमान है, इस स्थिति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कस्बे के विकास से कार्यशील व्यक्तियों की संख्या कृषि क्षेत्र से स्थानान्तरित होकर उद्योग, व्यवसाय 2011 के भू–उपयोग की तुलना में एवं सेवा क्षेत्रों की ओर वृद्धि करेगी, जिससे निश्चित रूप से खेड़ली कसबे का नगरीय प्रसार होगा और भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन आयेगा।

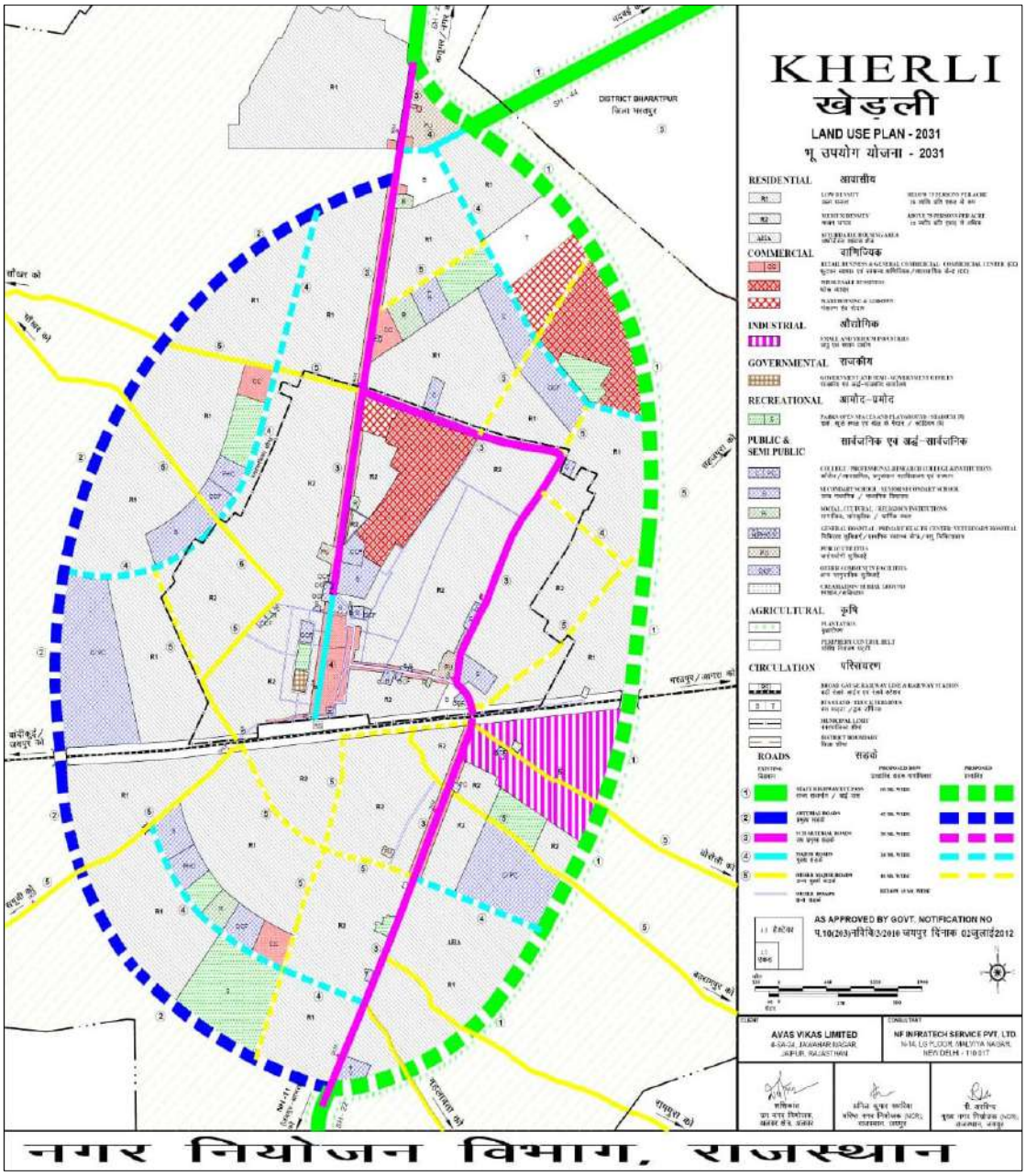

मानचित्र 3

तालिका 3: प्रस्तावित भूमि उपयोग, खेड़ली 2031

क्र.सं.	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	प्रस्तावित विकास योग्य क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का प्रतिशत	2011 की तुलना में परिवर्तन (प्रतिशत में)
1	आवासीय	1066.86	57.78	57.78	326.09
2	वाणिज्यिक	108.16	5.86	5.86	107.60
3	औद्योगिक	44.50	2.41	2.41	312.03
4	राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय	1.52	0.08	0.08	–
5	आमोद प्रमोद	60.73	3.29	3.29	1489.79
6	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	183.58	9.94	9.94	273.89
7	परिसंचरण	381.20	20.64	20.64	311.88
	प्रस्तावित विकास योग्य क्षेत्र एवं नगरीयकरण योग्य क्षेत्र	1846.55	100.00	100.00	

स्रोत : नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, 2021

सर्वाधिक वृद्धि आमोद–प्रमोद के क्षेत्र में लगभग 1489.80 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सुचारू परिवहन व्यवस्था स्थापित करने पर भी बल दिया गया है। 2011 की तुलना में परिसंचरण क्षेत्र में भी 311.90 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। चूँकि खेड़ली पृष्ठ प्रदेश की स्थिति का लाभ उठाकर कृषि आधारित उद्योगों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभर रहा है इसलिए प्रस्तावित भूमि उपयोग में औद्योगिक क्षेत्र में 312.03 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

1. खेड़ली राजस्थान के सघन आबादी क्षेत्र में स्थित है, इसका पृष्ठ प्रदेश उपजाऊ कृषि भूमि का है।
2. व्यावसायिक गतिविधियों का केन्द्र होने के फलस्वरूप जनसंख्या आव्रजन के कारण कस्बे का अनियोजित एवं अनियंत्रित विकास हुआ है।
3. खेड़ली कस्बे का विस्तार रेलवे लाईन के दोनों तरफ हुआ है।
4. कस्बे के बाहरी क्षेत्रों में कृषि भूमि पर छितराये रूप में आवासीय विस्तार हो रहा है।
5. कस्बे की बदलती हुई कार्यशील जनसंख्या के स्वरूप के कारण भूमि उपयोग में परिवर्तन हो रहा है।
6. कस्बे के भूमि उपयोग का विश्लेषण करने पर पाया गया कि भूमि उपयोग में विविधता मिलती है और यह समय के अनुसार परिवर्तित होती जाती है।
7. जन सुविधाओं का अभाव है तथा पर्याप्त समुचित जल निकासी व्यवस्था का विकास नहीं हुआ है।

सुझाव

1. खेड़ली कस्बे के अन्तर्गत वाणिज्यिक गतिविधियों का पदसोपान कम और उनका वितरण नगर, समुदाय और स्थानीय स्तर पर उपयुक्त स्थान पर होना चाहिए।
2. थोक व्यापार की गतिविधियाँ स्पष्ट क्षेत्रों में स्थापित होनी चाहिए।
3. परिवहन सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हेतु विभिन्न स्तरों पर विकास करना चाहिए। भारी वाहनों का प्रदेश शहर से बाहर ही होना चाहिए।
4. सुव्यवस्थित जल–मल निस्तारण एवं नालियों, सीवरेज की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि अतिवृष्टि के समय बाद के आपदा से बचा जा सके।
5. औद्योगिक गतिविधियाँ एकीकृत रूप में ऐसे स्थानों पर स्थापित की जाये जहाँ से शहर के लोगों को आसानी से रोजगार स्थल पर पहुँच हों।
6. सम्पूर्ण नगर क्षेत्र को योजना क्षेत्रों में विभाजित करना चाहिए।
7. अधिसूचित नगरीय क्षेत्र में अनियंत्रित विकास को रोकने के लिए परिधि नियंत्रण क्षेत्र का प्रावधान आवश्यक है, जिससे सुनियोजित विकास हो सके।

सन्दर्भ

1. इनायत अहमद : भारतीय नगरों का विकास और उत्त्पत्ति, 1950.
2. आर.एल. द्विवेदी : इलाहाबाद नगर का भूगोल, 1963.
3. एल.एन. उपाध्याय, अजमेर शहर की आकारिकी : एक अध्ययन, 1965.
4. बी.एल. गुप्ता एवं एम.के. खण्डेलवाल : जयपुर शहर की आकारिकी का अध्ययन, 1971.
5. एस.एस. श्रीवास्तव : फिरोजाबाद नगर का कार्यात्मक वर्गीकरण, 1966.
6. आर. रामचन्द्रन : भारत में शहरीकरण एवं शहरी प्रणाली, 1989.
7. एच.एस. सुधीरा : बंगलौर शहर का नगरीय प्रसार और स्थानिक नियोजन तंत्र, 2010.
8. अनिल कुमार यादव : राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का राजस्थान के क्षेत्रीय विकास में योगदान, 2010.